International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 7 No. 2 January – February - 2026

दिल्ली उंचा सुनती है – मानवीय संवेदना

डॉ. महेश रामचंद्र बनकर

हिंदी विभागप्रमुख,

दहिवडी कॉलेज दहिवडी

Corresponding Author – डॉ. महेश रामचंद्र बनकर

DOI - 10.5281/zenodo.18654517

प्रस्तावना:

कुसुमकुमार द्वारा लिखित 'दिल्ली उंचा सुनती है' - नाटक 'दो' अंको में विभाजित है | प्रत्येकी पाच- पाच दृश्य दिखाई देते हैं। यह यथार्थवादी मंचीय नाटक है। एक रिटायर्ड आदमी अपनी साधारन जीवनप्रनाली भी नहीं जी सकता। उसके जीवन में मूलत: 'पेंशन कि समस्या' प्रमुख रुप से उजागर हुई है। केवल पेंशन उपलब्ध न होने के कारण माधोसिंह अपनी बेटी 'नीति' को खो देते हैं । इसमे माधोसिंह का दोष नहीं है। कार्यालयीन व्यवस्था का दोष है।

शब्द के अर्थ – दिल्ली- बहुत बड़ा,संपन्नता से पूरा |

उंचा सुनना- व्यवस्था के कारण इतने बहरे हुए है, कि उसे सुनायी नहीं देता।

संशोधन पद्धति:

प्रस्तुत विषय पर शोध आलेख हेतु हमने आलोचना,विश्लेषण का आधार लिया है । जिसमें मूल नाटक, संदर्भ किताबे आदि का उपयोग किया है।

समीक्षा:

कुसुमकुमार का परिचय:

उनका जन्म '५ अगस्त १९३९' को 'पुरानी दिल्ली' में हुआ। पारिवारिक वातावरण सनातनी था । कुसुमकुमार की माद्यमिक शिक्षा दिल्ली में हुई। पंजाब विश्वविद्यालय से एम. ए, पीएच.डी की उपाधि प्राप्त की कुछ वर्ष दिल्ली के महिला महाविद्यालय में प्राद्यापक रुप में कार्यरत भी रही है।' 1

कुसुमकुमार केवल नाटककार के रुप में नहीं, बल्कि विभिन्न विधाओ में अपनी लेखनी चलायी है। जैसे हिरामन हाईस्कूल, पुर्वी द्वार, पर्दा बाडी, मीथी नीम (उपन्यास)

अभी रहेन्गे, त्रुश्नाकित, तीन अपराध, छत्र, रास्ते भर (कविता)

सुनो शेफाली, दिल्ली उंचा सुनती है, रावणलीला, प्रकाल (नाटक)

खाबगाह, मित्र मंडली, विधिवत प्रजा, चूहे, मादा मिट्टी, वह रंग शाम, कोरम, राज प्रमुख (एकांकी)

हिंदी नाट्य चिंतन (समीक्षा), 2

उनकी रचनाओं पर टेलिफिल्मे बनी-जो इस प्रकार है – सुनो शेफाली (निर्देशन –विमल इस्सर) खाबगाह (निर्देशन – योग टंडन), सन्ध्या छाया (निर्देशन-नादिरा बब्बर) आप एक सुंदर चित्रकार भी है चित्रो की सात एकल प्रद शनिया हुई है । साहित्यिक योगदान के लिए अनेक पुरस्कार मिले है। 1981-82 में साहित्यिक कृति पुरस्कार , हिंदी अकादमी पुरस्कार, 1997-98 में साहित्यिक योगदान सम्मान। 2009-में कल्चरल अकादमी ओफ राजस्थान से विशिष्ट सम्मान। 2011- नटसम्राट पुरस्कार। 4

हिंदी महिला नाटककारो में कुसुमकुमार का नाटक के विविध क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान रहा है। नाटककार ही नहीं तो उत्कृष्ट निर्देशक, अनुवाद्क नाटय समीक्षक भी है। उनकी अनेक रचनाओं का पंजाबी, मराठी, डोगरी, अंग्रेजी भाषा में अनुवाद हुआ है। 5

'दिल्ली उंचा सुनती है' –नाटक साधारण निम्न वर्ग की समस्या उजागर करता है। माधोसिंह सेवानिवृत्त होने के बाद 'पैतृक गाँव' में जाना चाहते हैं। लेकिन आर्थिक विवशता के कारण वह पेंशन ऑफिस में बार-बार चक्कर काटते हैं। तब ऑफिसवालो ने उन्हे जीवित होने का प्रमाणपत्र माँगा। माधोसिंह पूरी तरह निराश हुए। आज तक मृत आद्मी का प्रमाणपत्र मिलने की सुविधा है , लेकिन जीवित आद्मी का प्रमाणपत्र मिलने की सुविधा नही है। सरकारी ऑफिस का सहकारी तथा डॉक्टर भी माधोसिंह को 'कानूनन व्यवस्था' न होने के कारण मदद नहीं करते | वह निराश ,हताश होकर घर लौटते हैं | घर में पत्नी कमला, परित्यक्ता बेटी – 'नीति' है | इनकी चिंता माधोसिंह को होती है | बेटी 'नीति' हमेशा चिंता में रहती है | पिता की उम्र हुई है,इसलिए शारीरिक मेहनत का काम नहीं होता | दूसरी जगह पेंशन भी नहीं मिलती है | ऐसी स्थिति में मैं उनपर बोझ बनी हूँ | और ऐसे सोच-विचार करते हुए, वे एक दिन 'आत्महत्या' करती है | इस दुनिया में कौनसा बाप है ? जिसे अपनी बेटी बोझ लगती है |

बेटी की ऐसी अवस्था को देखकर माधोसिंह बेहद दुखी हुए | इस दुनिया में अपनी बेटी जीवित नहीं है | यह दुख वह सह नहीं सके | इसी चिंता में वे भी मर जाते हैं | मरने के बाद पोस्टमन दरवाजे पर आता है | माधोसिंह माधोसिंह पुकारता है | पत्नी बाहर आती है | पोस्टमन पूछता है- माधोसिंह कहा है ? तब वे कहती है वे नहीं रहे |6

सारांशत प्रस्तुत नाटक के माद्यम से यह पता चलता है, कि जब तक सांस है तब तक आन्स है | इस कलयुग की दुनिया में आदमी को किसी-न-किसी रूप के बहाने बनाकर रखती है | कोई मार्ग नहीं सूझता है | आदमी दर-दर ठोकरे खाकर अपना जीवन चलाता है |

मनुष्य जीवन में गरीबी ,बहुत क्लेशदायी, दुखदायी, वेदनामयी होती है | यह नाटक में दिखाई देता है | विशिष्ट उम्र होने के बाद मनुष्य मेहनत ,बौद्धिक,शारीरिक काम कर नहीं सकते | इसी स्थिति में घर की जिम्मेदारी उनका पीछा नहीं छोड़ती | तब वह वेदना बहुत त्रासदी-पूर्ण होती है |

नाटक में मगनलाल यह पात्र मानवीयता,आत्मीयता ,सहकारिता,दर्शानेवाला पात्र है | जो किराये पर घर देता है | लेकिन किराए की चिंता न करने की बात करता है| समाज में मगनलाल जैसे आदमी भी है | और परिचित होते हुए भी डॉक्टर प्रमाणपत्र नहीं देते ऐसे भी व्यक्ति है | वे कहते है, की ऐसी पेचीदगी में पड़ने के डर ,किसी बखेड़े के डर से वे प्रमाणपत्र नहीं देते |

"पंद्रह दिन बाद भी डाकखाने से प्रमाणपत्र नहीं मिले है | उन्हे दिल्ली का एक और चक्कर काटना पड़ेगा | आज उनके घर का चूल्हा नहीं जल रहा है | लगता है जैसे पूरे घर की सांस बंद है | मरता और भला कैसे है आदमी ?7

समाज में सुविधा बनाई गई है | जीवन ,परिवार ,आरोग्य ,विवाह व्यवस्था ,सुचारु रूप से चलने के लिए निर्माण किया हुआ है | वास्तव में समस्या जनसाधारण की होती है | गरीबी, आर्थिक धनाभाव, बेकारी, परित्यक्ता, विधवा समस्या, आत्महत्या, पेंशन, कार्यालयीन कर्मचारियों की कमजोर वृत्ति, असहिष्णुता आदि।

नीति की मृत्यु पर मगनलाल कहते हैं –मौत से बढ़कर तो अकेली गरीबी बहुत है | अब बताईए,माधो भाई ,मौत से बढ़कर और बूरा क्या होता है ?8

इस दुनिया में गरीब लोगों को मौत से बगैर कुछ नहीं है | साधारण मनुष्य का जीवन बाद मुश्कील होता है |

जीवनभर काम करनेवाले आदमी को अंतिम दिनों में होनेवाले दुख, दर्द, निराशा, हताशा, उदासी, का सामना किस प्रकार करना पड़ता है, यह बताने की कोशिश की है| इसमे कलयुगरूपी मानव की दशा का वर्णन हुआ है|

संदर्भ:

1. हिन्दी महिला नाटककार –डॉ भगवान जाधव –पृ 173
2. दिल्ली उंचा सुनती है-मूलपृष्ट से
3. हिंदी महिला नाटककार - डॉ भगवान जाधव - पृ 64
4. वही –पृ 64
5. वही –पृ 65
6. दिल्ली उंचा सुनती है कुसुमकुमार - पृ 17
7. वही –पृ 54
8. वही –पृ 84